6.5.2020

स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा भाग-1 के छात्रों के लिए

पाठ - नाटक के मुख्य तत्व

छात्र-छात्राओं !

जैसा कि पिछले वर्ग में नाटक के मुख्य तत्वों पर विचार करते हुए नाटक के मूल 'रस' तत्व विचार करते हुए मैंने स्पष्ट किया था कि इसके लिए अभिनेयता पर विचार करना अतिआवश्यक है। तात्पर्य यह भी है कि अभिनय के द्वारा ही रसनिष्पत्ति होती है इसलिए बहुत सजग होकर इसपर विचार करना चाहिए।

अभिनेयता :- अभिनेयता को प्रस्तुतीकरण से भी जोड़ा जाता है मतलब यह कि नाटक में वर्णित वस्तु (कथ्य) का संवादों के माध्यम से ही पात्रों को अभिव्यक्ति देनी होती है। इसे इसतरह भी समझा जा सकता है कि नाटक में वर्णित मूल भावों या विचारों का तना उनके पात्रों का अभिनेता या अभिनेत्री अभिनय करते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि चूंकि नाटक पाठ्य या श्रव्य काव्य नहीं ~~है अतएव~~ है, यह दृश्य काव्य है अतएव लिखित नाटक के आलेख को दृश्यत्व में परिणत करनेवाला प्रमुख तत्व 'अभिनय' है।

नाटक को रंगमंच पर प्रस्तुत करनेवाले पात्र या अभिनेता मंच पर उपस्थित होकर जो रूप परिवर्तन, चेष्टाएँ, वार्तालाप आदि कार्य करते हैं वह सब अभिनय के अन्तर्गत आता है। इसके चार प्रकार होते हैं — आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक। अंग, उपांग और प्रत्यंगों की चेष्टा आदि के द्वारा आंगिक अभिनय सम्पन्न होता है। वाचिक अभिनय के द्वारा नाट्य के पाठ्य अंश का प्रयोग होता है। आहार्य मुख्यतः वेश-भूषा आदि नेपथ्य विधियों से संबंधित अभिनय का एक प्रकार है। अन्य अभिनयों की अपेक्षा इस अभिनय-विधियों का प्रयोग नेपथ्य में ही सिद्ध कर लिया जाता है। इसी में दृश्य-विधान, प्रकाश व्यवस्था, संगीत योजना आदि का समावेश हो जाता है।

सात्विक अभिनय के अन्तर्गत, स्वेद, अश्रु आदि

की चर्चा होती है। अभिनय के प्रकारों में सबसे कठिन सात्विक अभिनय ही होता है। इसके अन्तर्गत मनुष्य के सुख-दुःखात्मक मनोवेगों की अभिव्यक्ति होती है। नाटक की परिभाषा के संदर्भ में जो 'भावानुकृतिर्नाट्यम्' कहा गया है - अर्थात् भावों की अनुकृति को नाटक कहते हैं इसी सात्विक अभिनय के द्वारा सम्पन्न होता है। वैसे तो भरत के नाट्य शास्त्र में अभिनय के उपर्युक्त चारों प्रकारों के भी कई उपभेद किये गये हैं एवं उनका विशद विवेचन है परन्तु यहाँ हिन्दी नाटकों में अभिनय से जिस रस निष्पत्ति की बात की गई है, उसपर विचार अपेक्षित है।

एक बार पुनः यदि धनंजय की परिभाषा 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यं' पर विचार करें तो अभिनय के जो प्रथम तीन प्रकार हैं — आंगिक, वाचिक और आहार्य इस परिभाषा में समाहित हो जाते हैं और 'भावानुकृतिर्नाट्यम्' में सात्विक अभिनय समाहित दीखता है। अवस्था की अनुकृति में नाट्याभिनय के बाह्य अवस्था के अनुकरण की बात होती है - जैसे जिस स्थल विशेष में नाटक की घटनाएँ घटित होती हैं, तथा पात्रों के संवादों के लिए रंगमंच की सज्जा, प्रकाश व्यवस्था, वेश-भूषा, संगीत-योजना इन सभी का अनुकरण नाटक में वर्णित स्थितियों के माध्यम से जब होता है तब दर्शक-दीर्घा में बैठा दर्शक नाटक में वर्णित स्थितियों में चला जाता है। उदाहरण स्वरूप ऐतिहासिक नाटक में राजा रजवाड़े की वेश-भूषा, रहन-सहन, बोल-चाल सभी में दर्शक अपनी उपस्थिति पाता है। दृश्य-योजना के अनुरूप ~~सहारे~~ प्रकाश व्यवस्था के सहारे बाढ़, आँधी और कई तरह के अदृश्य दृश्य भी दिखलाये जा सकते हैं, जिससे नाटकोचित स्थितियाँ (अवस्थाएँ) अनुकूल होती हैं।

सात्विक अभिनय में सुख-दुःखात्मक भावों की अभिव्यक्ति नाटक में वर्णित भावों एवं विचारों के पूर्णतः अनुकरण द्वारा होती है। जैसे जिन भावों का समावेश नाटककार अपने पात्रों में करता है, उन पात्रों के अनुकरण में अभिनेता अपने आपको इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि दर्शक को कभी यह महसूस नहीं होना चाहिए कि अमुक अभिनेता अमुक पात्र का अभिनय कर रहा है। उदाहरण स्वरूप 'रामायण धारावाहिक' में राम की भूमिका निभाते हुए सिने जगत के कलाकार अरुण गोविल की भूमिका से यह कभी प्रकट नहीं होना चाहिए कि वह राम नहीं अरुण गोविल है।

दूसरी बात, जब दर्शक-दीर्घा में बैठा हुआ जन सामान्य अरुण गोविल में भगवान राम का दर्शन करने लगे तब उसे रावण के दूसरे अभिनेता में अपना शत्रु दिखलाई पड़ने लगता है, और युद्ध आदि के समय तो कभी-कभी दर्शकों के हाथ-पाँव चलने लग जाते हैं दर्शक भूल जाता है कि वह नाटक देख रहा होता है सात्विक अभिनय में 'भावानुकृतिर्नाट्यम' का यही तत्व रसानुभूति का संचार दर्शकों में करता है, जो नाटक का अभीष्ट है।

इस प्रकार उपर्युक्त नाटक के तत्वों के विवेचन से हम यह कसौटी तय कर सकते हैं कि हमें जो चन्द्रगुप्त नाटक का अध्ययन करना है वह उपर्युक्त कसौटी पर कितना खरा उतरता है।

(मेघा ...)
हिन्दी विभाग, एम.एम.
कॉलेज, [illegible] (बि.)